हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं

अध्याय 2

संसार में

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय........ 1
सृष्टि........ 1
नियति विधान........ 4
प्रकृति........ 4
मनुष्यजाति........ 7
प्रकाशन........ 11
आदर्श........ 12
प्राकृतिक और अलौकिक प्रकाशन........ 12
छुटकारे-संबंधी और गैर छुटकारे-संबंधी प्रकाशन........ 13
सामान्य और विशेष प्रकाशन........ 13
कार्य और वचन प्रकाशन........ 14
मध्यस्थ और अमध्यस्थ प्रकाशन........ 14
स्रोत........ 15
भविष्यवाणी और पवित्रशास्त्र की प्रेरणा........ 16
प्रज्वलन और आंतरिक अगुवाई........ 16
आश्चर्यकर्म, चिह्न और चमत्कार........ 17
सामान्य अनुग्रह........ 20
भलाई को बढ़ाना........ 21
जीवन को बढ़ाना........ 22
उपसंहार........ 24

हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं

अध्याय दो

संसार में

परिचय

कई स्थानों और समयों पर कुछ दर्शनशास्त्रियों ने यह प्रस्ताव दिया है कि परमेश्वर ने जगत की रचना की और फिर इसे अकेला छोड़ दिया। और यह तब से उसके साथ बिना किसी संबंध के चलता आ रहा है। उदाहरण के लिए, ऐसी विचारधारा के तत्व प्राचीन यूनानी दर्शनशास्त्रियों के लेखनों में पाए जाते हैं। परंतु यह विचारधारा पश्चिमी देशों में सत्रहवीं और अठारहवीं सदियों में “दैववाद” नामक दर्शनशास्त्र से अधिक प्रचलित हो गई। दैववाद ने प्रसिद्ध रूप से परमेश्वर का वर्णन एक घड़ी बनानेवाले और सृष्टि का वर्णन एक घड़ी के रूप में किया। इसने सिखाया कि परमेश्वर ने घड़ी को बनाया, और उसे शेल्फ पर रखा तथा उसे चलने दिया। और तब से उसने उसे छुआ भी नहीं है।

परंतु पवित्रशास्त्र एक बहुत ही अलग तस्वीर प्रस्तुत करता है। सच्चे परमेश्वर के लिए सृष्टि कोई घड़ी नहीं है। यह नागरिकों के द्वारा भरा हुआ एक राज्य है। और परमेश्वर बड़ी सक्रियता से अपने राज्य को संभालता और चलाता है, और इसके लोगों के साथ संबंधों को संचालित करता है। और त्रिएकता का व्यक्तित्व जो इन दिनों में संसार के साथ सबसे अधिक प्रत्यक्ष रीति से कार्य करता है, वह पवित्र आत्मा है।

यह *हम पवित्र आत्मा पर विश्वास करते हैं* की हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, जिसका शीर्षक हमने “संसार में” दिया है। इस अध्याय में हम संपूर्ण सृष्टि में पवित्र आत्मा की गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

हम संसार में पवित्र आत्मा के कार्य के चार पहलुओं की जाँच करेंगे। पहला, हम सृष्टि के उसके कार्य की व्याख्या करेंगे जब यह सृष्टि आरंभ हुई थी। दूसरा, हम उसके नियति विधान के निरंतर चलनेवाले कार्य को देखेंगे, जिसके द्वारा वह सृष्टि को बनाए रखता और चलाता है। तीसरा, हम उस प्रकाशन पर ध्यान देंगे जो वह संपूर्ण सृष्टि में प्रदान करता है। और चौथा, हम उस सामान्य अनुग्रह का उल्लेख करेंगे जो वह संपूर्ण मनुष्यजाति को प्रदान करता है। आइए पहले हम आत्मा के सृष्टि के कार्य पर ध्यान दें।

सृष्टि

सन् 1647 में प्रकाशित वेस्टमिंस्टर वृहद् प्रश्नोत्तरी का प्रश्न संख्या 15 यह पूछता है :

> सृष्टि का कार्य क्या है?

प्रश्नोत्तरी का उत्तर सुनिए :

> सृष्टि का कार्य वह है जो परमेश्वर ने आदि में अपने सामर्थी वचन के द्वारा किया, शून्य से संसार और उसकी सब वस्तुओं की रचना अपने लिए की, और वह भी केवल छः दिनों में, और वह सब बहुत अच्छा था।

इस उत्तर में प्रश्नोत्तरी प्राथमिक रूप से ब्रह्मांड की आरंभिक सृष्टि के साथ परमेश्वर के रचनात्मक कार्य को जोड़ती है। परंतु इस उत्तर से सामान्य रीति से जुड़े पवित्रशास्त्र के उल्लेख मानते हैं कि सृष्टि के कार्य में निरंतर रूप में नई वस्तुओं को बनाने की बातें भी शामिल हैं, जैसे कि मानवीय प्राणी।

पिछले अध्याय में हमने कहा था कि प्रेरितों का विश्वास-कथन सृष्टि के कार्य को पिता के साथ जोड़ता है। और यह पूरी तरह से सत्य है कि पिता सृष्टि के कार्य का आरंभकर्ता है। परंतु पवित्रशास्त्र यह भी स्पष्ट करता है कि पुत्र और पवित्र आत्मा भी इस कार्य में सम्मिलित थे। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों 8:6 कहता है कि सृष्टि पुत्र के द्वारा पिता की ओर से हुई है। और धर्मविज्ञानी सामान्यतः इस बात पर सहमत हैं कि पवित्र आत्मा त्रिएकता का वह व्यक्तित्व था जिसने पिता की योजना के अनुसार और पुत्र के माध्यम से उस कार्य को पूरा किया।

संपूर्ण इतिहास में धर्मविज्ञानियों ने पवित्र आत्मा के आरंभिक रचनात्मक कार्य को दिखाने के लिए उत्पत्ति 1 की ओर संकेत किया है। यह अध्याय वर्णन करता है कि कैसे परमेश्वर ने "अपनी सामर्थ्य के वचन से" ब्रह्मांड और उसके निवासियों को बनाया। सुनिए कैसे उत्पत्ति 1:1-2 में यह विवरण आरंभ होता है :

> आदि में परमेश्‍वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्‍टि की। पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्‍वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था (उत्पत्ति 1:1-2)।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा था, पुराना नियम परमेश्वरत्व में पवित्र आत्मा को एक अलग व्यक्तित्व के रूप में नहीं देखता है। फिर भी, यह इस बात का संकेत अवश्य देता है कि परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा संसार की सृष्टि की। और परमेश्वर के आत्मा के विषय में नए नियम के प्रकाशन के संदर्भ में सृष्टि के इन कार्यों को पवित्र आत्मा के कार्यों के रूप में देखना उचित है।

उत्पत्ति 1 कहता है कि सृष्टि के दौरान पवित्र आत्मा "जल के ऊपर मण्डराता था।" "मण्डराता" के रूप में इब्रानी शब्द *राखाफ* (*רָחַף*) का प्रयोग केवल एक बार पंचग्रंथ में किया गया है। व्यवस्थाविवरण 32:11 में मूसा ने अपने बच्चों की देखभाल करनेवाले एक उकाब के रूपक का प्रयोग इस्राएल के साथ परमेश्वर के संबंध का वर्णन करने के लिए किया। यह अनुच्छेद अपने बच्चों की देखभाल और पोषण के लिए एक शक्तिशाली पक्षी के विचार को दर्शाने के लिए *राखाफ* (*רָחַף*) का प्रयोग करता है। अतः जब हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर का आत्मा सृष्टि के जल के ऊपर मंडराया, तो उसका अर्थ यह है कि आत्मा वह अभिभावक था जिसने परमेश्वर के वचन के अनुसार सृष्टि को आकार दिया और उसका पोषण किया।

सन् 1616–1683 के दौरान रहे प्योरिटन लेखक और धर्मविज्ञानी, जॉन ओवेन ने अपनी पुस्तक *ए डिस्कोर्स कंसर्निंग दी होली स्पिरिट* में पवित्र आत्मा की रचनात्मक सामर्थ्य के बारे में बात की। पुस्तक 1, अध्याय 4 में उसने उत्पत्ति 1 के पवित्र आत्मा के कार्य का वर्णन इस प्रकार किया :

> उसके बिना सब कुछ मृत समुद्र, एक अस्तव्यस्त गहरा स्थान था, जिसके ऊपर अंधकार छाया हुआ था, और उसमें से कुछ भी नहीं निकल सकता था... परंतु जब परमेश्वर का आत्मा उसके ऊपर मंडराया तो उन सब प्रकार, किस्म, तरह की वस्तुओं के सिद्धांत जिनसे इसके निवासियों की रचना हुई इसमें प्रवाहित किए गए।

यद्यपि यहाँ भाषा कुछ अप्रचलित है, फिर भी ओवेन का तर्क यह था कि पवित्र आत्मा द्वारा सृष्टि को रूप देने से पहले यह केवल अस्तव्यस्त, जीवनरहित जल था। परंतु जब आत्मा ने कार्य किया तो उसने व्यवस्थित क्रम और जीवन की रचना की।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

जैसा कि हमने उत्पत्ति 1:1, 2 में देखा, पवित्र आत्मा के कार्य से पहले सृष्टि "बेडौल और सुनसान" थी। यह तस्वीर अंधकार और गड़बड़ी की है। वहाँ कोई प्रकाश, व्यवस्थित क्रम या रूप का कोई भाव, कोई पेड़-पौधे, और कोई प्राणी नहीं थे। परंतु जैसा कि हम उत्पत्ति 1:3-31 में पढ़ते हैं, परमेश्वर के आत्मा ने वह सब कुछ बदल दिया। पहले तीन दिनों के दौरान उसने सृष्टि के बेडौलपन के साथ कार्य किया। पहले दिन, उसने ज्योति बनाई, और साथ ही साथ दिन और रात की रचना की। दूसरे दिन, उसने एक अंतर को बनाया जिसने जल को दो भागों में बाँट दिया। हम इस अंतर को सामान्यतः वातावरण या आकाश कहते हैं जो जल से भरे बादलों को नीचे के संसार से अलग करता है। तीसरे दिन, उसने जल को ऐसे इकट्ठा किया कि भूमि की रचना हो गई, और साथ ही उन पेड़-पौधों की जो भूमि पर उगते हैं। इन पहले तीन दिनों के दौरान उसने दिन और रात, आकश और जल, और पेड़-पौधों सहित सूखी भूमि को व्यवस्थित करने के द्वारा सृष्टि की सीमाओं को निर्धारित किया।

अगले तीन दिनों के दौरान — सृष्टि के सप्ताह के चौथे से लेकर छठे दिन तक — परमेश्वर के आत्मा ने सृष्टि की सुनसान अवस्था को संबोधित किया। और उसने ऐसा उन अलग-अलग क्षेत्रों को भरने के द्वारा किया जो उसने पहले रचे थे। चौथे दिन उसने दिन और रात के उन क्षेत्रों को भरने के लिए सूर्य, चंद्रमा और तारों की रचना की जिन्हें उसने पहले दिन रचा था। पाँचवें दिन उसने जल में रहनेवाले जंतुओं और पक्षियों की रचना की और इस प्रकार समुद्र और आकाश के क्षेत्रों को भरा जिनकी रचना उसने दूसरे दिन की थी। और छठे दिन उसने सूखी भूमि के उस क्षेत्र को भरने के लिए भूमि पर रहनेवाले जानवरों और मनुष्यों की रचना की जिसकी रचना उसने तीसरे दिन की थी।

उत्पत्ति 1 के अतिरिक्त, पवित्रशास्त्र के अन्य कई भाग भी परमेश्वर के सृष्टि के कार्य को आत्मा के साथ जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, यशायाह 40:12-13 सृष्टि को आकार देने में आत्मा की भूमिका का यह विवरण प्रदान करता है :

> किसने महासागर को चुल्लू से मापा और किसके बित्ते से आकाश का नाप हुआ, किसने पृथ्वी की मिट्टी को नपुए में भरा और पहाड़ों को तराजू में और पहाड़ियों को काँटे में तौला है? किसने यहोवा के आत्मा को मार्ग बताया या उसका मन्त्री होकर उसको ज्ञान सिखाया है? (यशायाह 40:12-13)

इसका निहित उत्तर निस्संदेह "कोई नहीं" है। केवल परमेश्वर के आत्मा ने ये कार्य किए हैं। और भजन 104:24-30 इस रीति से सृष्टि को भरने के कार्य के बारे में बात करता है :

> हे यहोवा, तेरे काम अनगिनित हैं! इन सब वस्तुओं को तू ने बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है। इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है, और उस में अनगिनित जलचर, जीव-जन्तु, क्या छोटे, क्या बड़े भरे पड़े हैं... तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं, और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। फिर तू अपनी ओर से साँस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है (भजन 104:24-30)।

यह अनुच्छेद जल, पेड़-पौधों, और प्राणियों जैसी सृष्टि की वस्तुओं का उल्लेख करता है। और यह इस कार्य को आत्मा के साथ जोड़ता है।

> सृष्टि के सप्ताह के दौरान पवित्र आत्मा बहुत ही सक्रिय था। उसने एक सक्रिय भूमिका निभाई थी। उत्पत्ति 1:2 में यह कहता है कि पवित्र आत्मा गहरे जल के ऊपर मंडराया या मंडरा रहा था... और जब मैंने इस बात पर विचार किया तो मैंने पाया कि यह उससे कितना मिलता-जुलता है जो पवित्र आत्मा उस व्यक्ति के हृदय के साथ करता है जिसे वह नया जीवन प्रदान करता है। मेरे विचार से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

> "मंडराना" किसी न किसी तरह से पवित्र आत्मा द्वारा जीवन प्रदान करने को दर्शाता है। उत्पत्ति 1 की बहुत सी बातें मुझे समझ नहीं आतीं, परंतु यह स्पष्ट है कि वहाँ एक भौतिक ब्रह्मांड था जिसके ऊपर पवित्र आत्मा मंडरा रहा था, और वह परमेश्वर द्वारा वहाँ विद्यमान बातों से सब कुछ की रचना करने का एक आधार था। इसलिए पवित्र आत्मा गहरे जल के ऊपर मंडराया। वह, परमेश्वर का पुत्र, पिता, अर्थात् त्रिएकता के तीनों व्यक्तित्व सृष्टि के समय सक्रिय थे।
>
> — रेव्ह. माइक ओसबोर्न

सृष्टि के सप्ताह के दौरान संसार में पवित्र आत्मा की गतिविधि पर ध्यान देने के बाद, आइए हम शेष इतिहास में नियति विधान के उसके कार्य की ओर अपना ध्यान लगाएँ।

नियति विधान

धर्मवैज्ञानिक परंपराएँ कभी-कभी नियति विधान के विवरणों को अलग-अलग रूप में समझती हैं। परंतु सामान्य रूप में सुसमाचारिक लोग इसे इस प्रकार समझते हैं :

> प्राणियों, कार्यों और वस्तुओं सहित संपूर्ण सृष्टि को संचालित करने और बनाए रखने का परमेश्वर का कार्य।

मूलभूत रूप से, नियति विधान उन सब बातों को समाहित करता है जो पवित्र आत्मा संपूर्ण इतिहास में संसार में करता है। इसे सरल बनाने के लिए हम अपने विचार-विमर्श को इसके सामान्य क्रियान्वयन तक ही सीमित रखेंगे। और हम इस अध्याय में तथा आने वाले अध्यायों में अलग-अलग विषयों के रूप में इसके कई तत्वों पर चर्चा करेंगे।

अधिकतर, पवित्रशास्त्र के ऐसे अनुच्छेद जो नियति विधान के बारे में बात करते हैं, वे त्रिएकता के व्यक्तित्वों के बीच अंतर नहीं करते। और हमें स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए कि संपूर्ण त्रिएकता परमेश्वर के नियति विधान के कार्य में शामिल होती है। परंतु इन अनुच्छेदों में फिर भी आत्मा के पर्याप्त उल्लेख हैं जिनसे हम उसकी भूमिका के महत्व को दर्शा सकते हैं।

हम पवित्र आत्मा के नियति विधान के कार्य का वर्णन दो भागों में करेंगे। पहला, हम प्रकृति के क्षेत्र में उसके कार्य पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और दूसरा, हम विशेष रूप से मनुष्यजाति के बीच उसके कार्य का उल्लेख करेंगे। आइए पहले प्रकृति पर ध्यान दें।

प्रकृति

जब हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रकृति को जाँचते हैं तो ऐसा लगता है कि यह अपने आप से चल रही हो। मौसम, भूगोल, और जीव-विज्ञान नियमित, प्राकृतिक नियमों के साथ अपेक्षाकृत यांत्रिक पद्धतियाँ प्रतीत होती हैं। यही बात खगोल विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, भूविज्ञान, और इसी तरह के अन्य प्राकृतिक विज्ञानों के लिए भी कही जा सकती है। परंतु पवित्रशास्त्र सिखाता है कि यदि हमें प्रकृति को उचित रूप से समझना है, तो हमें यह जानना है कि परमेश्वर ने इसे रचा है, और कि वह उसके सब क्रिया-कलापों को संचालित करता और बनाए रखता है।

जैसा कि भजनकार ने भजन 135:6-7 में लिखा :

> जो कुछ यहोवा ने चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और सब गहिरे स्थानों में किया है। वह पृथ्वी की छोर से कुहरे उठाता है, और वर्षा के लिये बिजली बनाता है, और पवन को अपने भण्डार में से निकालता है (135:6-7)।

प्रकृति में परमेश्वर की विधानीय सामर्थ्य का सबसे नाटकीय प्रदर्शन निस्संदेह नूह के दिनों में जल-प्रलय था। उत्पत्ति 6–9 संकेत करते हैं परमेश्वर ने मनुष्यजाति की दुष्टता के प्रत्युत्तर में संपूर्ण संसार को जलमग्न कर दिया। और उत्पत्ति 6:3 दंड को लाने में आत्मा की भूमिका को दर्शाता है। प्रकृति में परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रदर्शन निर्गमन 7–12 में वर्णित मिस्र पर डाली विपत्तियों में भी किया गया है। हम इसे निर्गमन 14 में लाल समुद्र को दो भागों में बाँटने में भी देखते हैं। और प्रकृति के ऊपर आत्मा का सबसे अधिक विस्मयकारी अधिकार अम्मोरियों के साथ इस्राएलियों के युद्ध के दौरान "जब तक उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं से बदला न लिया" तब तक आकाश में सूर्य का एक स्थान पर रुक जाना था, जैसा कि हम यहोशू 10:13 में पढ़ते हैं।

स्वयं परमेश्वर ने अय्यूब 38–41 में प्रकृति पर अपने सामान्य विधानीय नियंत्रण को स्पष्ट किया। उसने पृथ्वी, समुद्र, दिन और रात, मौसम, और सब प्रकार के जानवरों पर अपनी प्रभुता का उल्लेख किया। और जबकि अय्यूब की पुस्तक त्रिएकता के व्यक्तित्वों के बीच अंतर स्पष्ट नहीं करती, फिर भी अय्यूब 34:14, 15 परमेश्वर के आत्मा की ओर एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में संकेत करते हैं जो संसार में परमेश्वर की ईश्वरीय इच्छा को पूरा करता है।

पवित्रशास्त्र यह भी सिखाता है कि पवित्र आत्मा संसार को ऐसे रूप में संचालित करता है कि वह नियमित रूप से इसके गुणों को नया बनाता रहता है और इसके प्राणियों को संचालित करता है। उदाहरण के तौर पर, जैसे कि भजन 135 हमें बताता है, वह वर्षा, बादलों, हवा और अन्य तत्वों की रचना करता है। और भजन 65 जैसे स्थानों में हम देखते हैं कि वह नदियों, तराइयों, पहाड़ों और मरुस्थलों की रचना करने के द्वारा पृथ्वी की भौगोलिक स्थिति को बदल देता है। और अन्य कई स्थानों पर, वह पेड़-पौधों, जानवरों और लोगों के रूप में नए जीवन को उत्पन्न करता है। हरेक नई वस्तु जो सृष्टि में प्रकट होती है वह आत्मा का कार्य है।

आपको याद होगा कि भजन 104 पवित्र आत्मा के सृष्टि के कार्यों पर बल देता है। वही भजन नियति विधान के बारे में भी बात करता है। यह इस विषय में बात करता है कि कैसे परमेश्वर नालों में सोतों को बहाता है। यह सराहता है कि कैसे वह जीव-जंतुओं को भोजन प्रदान करता है। यह उस जीवन की सराहना करता है जो वह पौधों और वृक्षों को देता है, और जो बसेरे वह पक्षियों और अन्य जानवरों को प्रदान करता है। और यह हमें आश्वस्त करता है कि वह सूर्य और चंद्रमा, दिन और रात, तथा वार्षिक ऋतुओं को नियंत्रित करता है। ये सब प्राकृतिक गतिविधियाँ प्रतीत होती हैं। परंतु परमेश्वर उन सब पर नियंत्रण रखता है। भजन 104:24-30 को सुनें :

> हे यहोवा... पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है... इन सब को तेरा ही आसरा है, कि तू उनका आहार समय पर दिया करे... तू अपनी मुट्ठी खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं... तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैं, और मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। फिर तू अपनी ओर से साँस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं; और तू धरती को नया कर देता है (भजन 104:24-30)।

भजनकार जानता था कि परमेश्वर शाब्दिक रूप से किसी के लिए भोजन तैयार करके उन्हें अपने हाथ से नहीं खिलाता। वह समझता था कि जानवर उन चक्रों और अनुक्रमों के अनुसार भोजन प्राप्त करते हैं जिन्हें हम कई बार "भोज्य श्रृंखलाएँ" कहते हैं। एक भौतिक दृष्टिकोण से यह प्रक्रिया एक प्राकृतिक,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

आत्म-संचालित पद्धति प्रतीत होती है। परंतु पवित्रशास्त्र इस सतही समझ को पीछे छोड़कर यह देखता है कि परमेश्वर इन व्यवहारों को संचालित करता है। और हम ऐसे ही विचारों को यशायाह 34:15, 16 में देखते हैं।

भाज्नकर ने यह भी कहा कि परमेश्वर सृष्टि का प्रबंध इस रीति से करता है जो जीवन को बनाए रखता है, परंतु साथ ही सीमित भी रखता है। विशेषकर, कोई भी प्राणी परमेश्वर के हस्तक्षेप के बिना नहीं मरता। वह उन्हें जीवित रखने के लिए उनके भीतर उनकी सांस, या प्राण को बनाए रखता है। जब उनके मरने का निर्धारित समय आता है तो वह उनकी सांस, या उनके प्राण को हटा देता है। और भजनकार ने सृष्टि के साथ इस प्रकार के परस्पर संबंध को परमेश्वर के आत्मा के साथ जोड़ा।

यीशु ने अपने पहाड़ी संदेश में ऐसे ही विचार को प्रकट किया जब उसने अपने श्रोताओं को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए चिंता न करने को प्रोत्साहित किया। मत्ती 6:26-33 में यीशु के शब्दों को सुनिए :

> आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है... जंगली सोसनों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं। तौभी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था... पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी (मत्ती 6:26-33)।

यीशु का तर्क यह था कि यदि लोग परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करेंगे तो परमेश्वर अपने नियति विधान के द्वारा कार्य करके उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करेगा।

> जब हम परमेश्वर के नियति विधान के बारे में बात करते हैं, तो हम परमेश्वर की सृष्टि और उसके सब प्राणियों के लिए उसकी निरंतर देखभाल के बारे में बात करते हैं। अतः हम केवल यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की और फिर कुछ और करने के लिए कहीं और चला गया। नहीं, परमेश्वर अपने सामर्थ्य के वचन के द्वारा संसार को निरंतर संभाले रखता है। अपने वचन के द्वारा, अपने आत्मा के द्वारा परमेश्वर संसार को निरंतर संभाले रखता है। इसलिए हम परमेश्वर के विषय में यह सोचते हैं कि वह हमारी सब जरूरतें पूरी करता है : भोजन, जल, हवा, और वे सब चीजें जिन्हें हम हलके में लेते हैं, परमेश्वर वे सब प्रदान करता है।
>
> — रेव्ह. डॉ. जस्टिन टैरी

हमें यह दर्शाने के लिए रुकना चाहिए कि यीशु ने परमेश्वर के विधानीय कार्य को पिता के साथ जोड़ा था। उसने ऐसा अपने राज्य पर पिता के अधिकार पर बल देने के लिए किया। परंतु धर्मविज्ञानी आम तौर पर यह मानते हैं कि जब पिता विधानीय कार्य की आज्ञा देता है, तो यह पवित्र आत्मा है जो उन आज्ञाओं को पूरा करता है। हम मत्ती 10:20 और लूका 11:13 जैसे स्थानों पर इस बात को देखते हैं। और हम इससे संबंधित विचारों को यूहन्ना 15:26; प्रेरितों 2:33; और 1 पतरस 1:2 जैसे स्थानों पर देखते हैं।

प्रकृति में नियति विधान के बारे में बात करने के बाद आइए अब हम इस बात पर विचार करें कि पवित्र आत्मा मनुष्यजाति में कैसे कार्य करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

मनुष्यजाति

जैसे कि मनुष्यजाति प्राकृतिक संसार का हिस्सा है, तो हम पर भी वही बातें लागू होती हैं जो हमने प्रकृति के विषय में कही हैं। परमेश्वर हमारे चारों ओर के वातावरण को संभालता और संचालित करता है, जैसे कि हम भजन 135:6, 7 में देखते हैं। वह हमारे भोज्य स्रोतों को वश में रखता है, और यहाँ तक कि हमारे प्रजनन-तंत्र की सफलता को भी, जैसा कि हम व्यवस्थाविवरण 7:13 में पढ़ते हैं। उसका आत्मा ही हमारे जीवनों का स्रोत है, जैसा कि हम अय्यूब 33:4 में पढ़ते हैं। और वह यह कार्य संसार की प्राकृतिक गतिविधियों को बनाए रखने के द्वारा ही नहीं करता है। जैसा कि हम देखेंगे, वह हमारी परिस्थितियों, हमारी देहों, और यहाँ तक कि हमारे मनों को प्रभावित करने के द्वारा मनुष्यजाति को भी संचालित करता है।

जब पवित्र आत्मा विधानीय रूप में संसार को संचालित करता है, तो वह मनुष्यों को कई भिन्न-भिन्न रूपों में प्रभावित करता है। और इससे कई बार मसीही बेचैन, या यहाँ तक कि क्रोधित भी हो जाते हैं। हम चिंता करते हैं कि वह शायद हमारी इच्छा का उल्लंघन कर रहा है, या हमें पापमय कार्यों के बारे सोचने और उन्हें करने के लिए मजबूर कर रहा है। कई बार हम उस पर गलत कार्य करने का दोष भी लगाते हैं जब वह हमें कष्टों में से होकर जाने देता है। इसलिए पहली बात जो हमें मन में रखनी चाहिए, वह यह है कि पवित्र आत्मा कभी कोई पापमय कार्य नहीं करता। वह कभी हमारे साथ दुर्व्यवहार नहीं करता। और दूसरी बात जो हमें याद रखनी चाहिए, वह यह है कि वह हमेशा विश्वासियों की परम भलाई के लिए कार्य करता है। जीवन शायद अभी पीड़ादायक होगा। परंतु जो भी कष्ट हम सहते हैं, अंततः उनका परिणाम अनंत आशीषों के रूप में हमें मिलेगा। अब अलग-अलग धर्मवैज्ञानिक परंपराओं ने इन विचारों को अलग-अलग रूपों में समाहित किया है। परंतु बाइबल के सब विश्वासियों को इस बात की पुष्टि करनी चाहिए कि पवित्र आत्मा का नियति विधान का कार्य उतना ही भला और उतना ही पवित्र है जितना आत्मा स्वयं है।

सुनिए किस प्रकार पौलुस ने प्रेरितों के काम 17:24-26 में नियति विधान के क्षेत्र को सारगर्भित किया :

> जिस परमेश्‍वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया... वह स्वयं ही सब को जीवन और श्‍वास और सब कुछ देता है... [उसने] उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को बाँधा है (17:24-26)।

ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस के मन में पवित्र आत्मा था, क्योंकि उसने परमेश्वर को ऐसे दर्शाया जो हमें जीवन और श्वास देता है। और उसने संकेत किया कि आत्मा के विधानीय कार्य में हमें वह सब कुछ देना जो हमारे पास है, और उन समयों और स्थानों को संचालित करना शामिल होता है जिनमें हम रहते हैं।

पवित्र आत्मा संसार को केवल बनाए ही नहीं रखता कि हम उसमें रह सकें। वह तो वास्तव में हमारे जीवनों की विशिष्ट परिस्थितियों को संचालित करता है, और एक भाव में हमारे द्वारा किए गए चुनावों को भी। निस्संदेह, हम सब पवित्र आत्मा के कार्य के इस पहलू को हर बार स्वीकार करते हैं जब हम पवित्रशास्त्र में निहित आश्चर्यजनक चंगाइयों और मृतकों में से जी उठने की घटनाओं की पुष्टि करते हैं। और जब हम प्रार्थना करते हैं तो हम अपने जीवनों में यह विश्वास करते हुए आत्मा के नियति विधान को स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर हमारी परिस्थितियों, हमारे स्वास्थ्य, हमारे जीवनकाल, और यहाँ तक कि हमारे मनों और हमारी आत्माओं को बदल सकता है और वह बदलना चाहता है।

पवित्रशास्त्र में हम पवित्र आत्मा द्वारा मनुष्यों के जीवनों का संचालन करने के कुछ चरम उदाहरण देखते हैं। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 2:30, 31 में मूसा ने सिखाया कि परमेश्वर ने हेशबोन के

राजा सीहोन का चित्त कठोर और मन हठीला कर दिया था। और उसने ऐसा इसलिए किया कि इस्राएली सीहोन और उसकी सेना को हरा दें और उनका देश इस्राएलियों के वश में आ जाए।

और निर्गमन 10:20, 27 तथा 11:10 में परमेश्वर ने मिस्र के राजा, फ़िरौन का मन कठोर कर दिया जिससे उसने इस्राएलियों को दासत्व से स्वतंत्र करने से इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप, फ़िरौन और उसके लोगों को अंधकार तथा पहलौठों की मृत्यु की विपत्तियों का सामना करना पड़ा।

भजन 135:6-12 इस रीति से सीहोन, फ़िरौन और अन्य राजाओं पर आत्मा के विधानीय नियंत्रण को स्मरण करता है :

> जो कुछ यहोवा ने चाहा उसे उसने आकाश और पृथ्वी... में किया है... उसने मिस्र में... सब के पहिलौठों को मार डाला... उसने बहुत सी जातियाँ नष्ट कीं, और सामर्थी राजाओं को, अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन को, और बाशान के राजा ओग को, और कनान के सब राजाओं को घात किया; और उनके देश को बाँटकर, अपनी प्रजा इस्राएल का भाग होने के लिये दे दिया (भजन 135:6-12)।

यह अवलोकन कि परमेश्वर जो चाहता है वह करता है, पवित्रशास्त्र में कई बार पाया जाता है, अक्सर एक ऐसी अभिपुष्टि के रूप में कि परमेश्वर सक्रिय रूप से मानवीय इतिहास को बनाए रखता है और निर्देशित करता है।

एक और उदाहरण के रूप में, दानिय्येल 4 में परमेश्वर ने बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर को उसके राजकीय अधिकार और उसके मानसिक संतुलन को छीन लेने के द्वारा दंड दिया। नबूकदनेस्सर उस निर्धारित समय के बीत जाने तक जंगली जानवरों के बीच रहा और घास खाता रहा। तब परमेश्वर ने उसके मानसिक संतुलन और उसके सिंहासन को पुनर्स्थापित किया। और अपनी इस नई नम्रता में नबूकदनेस्सर ने परमेश्वर की विधानीय सामर्थ्य पर विचार किया : सुनिए दानिय्येल 4:35 में नबूकदनेस्सर ने क्या कहा :

> [परमेश्वर] स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच
> अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर उस से नहीं कह सकता है, "तू ने यह क्या किया है?" (दानिय्येल 4:35)।

भजन 135 के समान नबूकदनेस्सर ने भी यह पाया कि परमेश्वर जैसा चाहे वैसा करता है। वह अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मानवीय निर्णयों और गतिविधियों को संचालित करता है। या जैसा कि हम भजन 33:10-11 में पढ़ते हैं :

> यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है... यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी (भजन 33:10-11)।

> जब भी हम सामान्य नियति विधान में पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में सोचते हैं, जैसे कि संसार के प्रशासकों या राजाओं या हाकिमों या राष्ट्रों, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि रोमियों 13 हमें बताता है कि शासकों को संसार में व्याप्त बुराई को दंड देने और भलाई को बढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया है... परंतु मेरे विचार में प्रशासकों और राजाओं और राष्ट्रों के बीच हमारे लिए पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में याद रखने की सबसे महत्वपूर्ण बात वह है जो बाइबल मसीहा अर्थात् राजा के विषय में बताती है जिसे परमेश्वर नई सृष्टि पर शासन करने के लिए स्थापित करेगा। यशायाह 11:2 उसका वर्णन ऐसे करता है जिस पर यहोवा का आत्मा ठहरा रहता है... उसके पास बुद्धि का आत्मा है। उसके पास समझ का

> आत्मा, युक्ति और पराक्रम का आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय का आत्मा है। और क्योंकि महान मसीहा के पास इस रीति से परमेश्वर का आत्मा है, इसलिए वह न केवल बुराई को रोकता है, बल्कि सिद्धता के साथ भलाई को बढ़ाता है। वह सारी नई सृष्टि में धार्मिकता को बढ़ाता है। इसलिए जब हम राजनीति और राजनैतिक अगुवों के विषय में आत्मा के कार्य के बारे में सोचते हैं तो हम इसे और अधिक सामान्य रीति से सोच सकते हैं जिसमें वह विशेषकर अविश्वासी राजनेताओं में बुराई को रोकता है, और साथ-साथ विश्वासी राजनेताओं में भी, ताकि वे बुराई को दंडित करनेवाले और भलाई को बढ़ानेवाले बन सकें। परंतु इसकी प्रमुख अभिव्यक्ति पवित्र आत्मा का मसीहा पर उंडेला जाना है ताकि वह संसार के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक धार्मिकता को स्थापित करे।
>
> — डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर

मनुष्यजाति पर परमेश्वर का विधानीय संचालन राजाओं और राष्ट्रों से आगे बढ़कर प्रत्येक मनुष्य, और हमारे जीवनों के प्रत्येक पहलू तक कार्य करता है। और जिस प्रकार परमेश्वर हमारी परिस्थितियों को प्रभावित करता है, उसी प्रकार वह हमारे हृदयों और मनों को भी संचालित करता है। हम यह पहले ही देख चुके हैं कि राष्ट्रीय अगुवों के साथ यह कैसे होता है। और ऐसा ही प्रत्येक व्यक्ति के साथ भी होता है। सुनिए भजन 33 पद 13-15 में क्या कहता है :

> यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है, वह सब मनुष्यों को निहारता है... वही जो उन सभों के हृदयों को गढ़ता, और उनके सब कामों का विचार करता है (भजन 33:13-15)।

अपने नियति विधान में आत्मा संपूर्ण मनुष्यजाति के हृदयों को गढ़ता है। वह हमारे लगावों, धारणाओं, प्रतिबद्धताओं, और अभिलाषाओं, अर्थात् हरेक उस बात को गढ़ता है जो हमारे अस्तित्व और हमारे कार्यों में योगदान देती है।

जब बात पूरी मनुष्यजाति की आती है तो पवित्र आत्मा का विधानीय कार्य कभी-कभी ईश्वरीय दंड को भयानक रूप से लागू करना भी होता है। एक बार फिर, हम नूह के दिन के वैश्विक जल-प्रलय, या मिस्र पर आई विपत्तियों पर विचार कर सकते हैं। और इसी प्रकार उसके कई अन्य कार्य अविश्वासियों के लिए विनाशकारी होते हैं। व्यवस्थाविवरण 29:4, यशायाह 6:9, 10, यूहन्ना 12:37-41, और रोमियों 11:8 सब परमेश्वर द्वारा दुष्टों के हृदयों और मनों को नया करने से इनकार करने को दर्शाता है ताकि वह उन्हें मन फिराकर उद्धार पाने से रोके रहे। और रोमियों 1:24-28 को सुनें जहाँ पौलुस ने दुष्टों के दंड पर चर्चा की :

> परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार... नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया... जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, तो परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करें (रोमियों 1:24-28)।

ईश्वरीय नियति विधान पापियों के लिए एक भयावह विचार होना चाहिए। इसका अर्थ है कि परमेश्वर दुष्टों को दंड देने के लिए हमेशा न्याय के दिन तक प्रतीक्षा नहीं करता है। और यह भविष्य में आने वाले दंड के प्रकार को प्रकट करता है। परंतु इसी तरह से इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देने के लिए भी हमेशा अंतिम दिन की प्रतीक्षा नहीं करता है। हमारी जरूरतें पूरी करने और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

हमारे जीवनों को सुरक्षित रखने के साथ-साथ वह हमें आज्ञाकारी बनाने के लिए हमारे हृदयों और मनों में भी कार्य करता है। जैसे कि पौलुस ने फिलिप्पियों 2:13 में लिखा :

> परमेश्‍वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है (फिलिप्पियों 2:13)।

विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों के प्रति पवित्र आत्मा के विधानीय व्यवहार की इस समझ को पुराने नियम के कई अनुच्छेदों में देखा जा सकता है। यशायाह 29:16, और 45:9, तथा यिर्मयाह 18:1-19 में परमेश्वर को कुम्हार और मनुष्यों को मिट्टी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। और प्रत्येक विषय में पवित्रशास्त्र यह तर्क देता है कि कुम्हार के पास यह अधिकार है कि वह अपनी मिट्टी से जो चाहे वह बनाए। इस रूपक का प्रयोग करते हुए पौलुस ने रोमियों 9:18-21 में ईश्वरीय विधान के इस पहलू को सारगर्भित किया, जब उसने लिखा :

> [परमेश्वर] जिस पर चाहता है उस पर दया करता है, और जिसे चाहता है उसे कठोर कर देता है। अतः तू मुझ से कहेगा, "वह फिर क्यों दोष लगाता है? कौन उसकी इच्छा का सामना करता है?" हे मनुष्य, भला तू कौन है जो परमेश्‍वर का सामना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है, "तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?" क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं कि एक ही लोंदे में से एक बरतन आदर के लिये, और दूसरे को अनादर के लिये बनाए? (रोमियों 9:18-21)

यहाँ पौलुस ने कहा कि मिट्टी के ऊपर कुम्हार का अधिकार यहाँ तक है कि वह लोगों के हृदयों को कठोर करे, और उन्हें उसका विरोध करने और उसके दंड के अधीन आने के लिए प्रेरित करे।

जैसा कि हमने सुझाव दिया है, अलग-अलग धर्मवैज्ञानिक परंपराएँ आत्मा के कार्य को अलग-अलग रूप में समझती हैं। लोगों को मसीह पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करने में पवित्र आत्मा के विधानीय कार्य के बारे में विचार करें। हम आत्मा के मन-परिवर्तन के कार्य की व्याख्या दो मार्गों या राहों के आधार पर कर सकते हैं। एक मार्ग मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने को प्रस्तुत करता है। और दूसरा मार्ग उसे ठुकराने को प्रस्तुत करता है। सब सुसमाचारिक मसीहियों को एकमत होना चाहिए कि पवित्र आत्मा विधानीय रूप से लोगों को प्रेरित करता है कि सुसमाचार के साथ उनकी भेंट हो, और वे इस निर्णय का सामना करें। परंतु इस प्रक्रिया में आत्मा की सहभागिता के विषय में कम से कम तीन प्रमुख दृष्टिकोण हैं।

पहला, कुछ धर्मवैज्ञानिक परंपराएँ मानती हैं कि मनुष्यों के पास उद्धार का मार्ग या फिर सर्वनाश का मार्ग चुनने की स्वाभाविक योग्यता है। इस दृष्टिकोण में आत्मा का विधानीय कार्य सुसमाचार के साथ हमारी भेंट करवाने पर केंद्रित होता है।

दूसरा दृष्टिकोण सहमत होता है कि पवित्र आत्मा हमारे जीवनों को ऐसे नियोजित करता है कि हमारी भेंट सुसमाचार से हो। परंतु यह इस बात पर भी विश्वास करती है कि पतित मनुष्यों में सुसमाचार के प्रति सकारात्मक रूप से प्रत्युत्तर देने की स्वाभाविक योग्यता नहीं होती। हमारी पतित दशा में हम हमेशा सर्वनाश का मार्ग ही चुनते हैं। अतः इस दृष्टिकोण में पवित्र आत्मा "पूर्वगामी अनुग्रह" या ऐसा अनुग्रह प्रदान करता है जो उद्धार देनेवाले विश्वास से पहले आता है, और जो उद्धार के मार्ग को चुनने में हमें योग्य बनाता है। एक बार जब हम इस अनुग्रह को प्राप्त कर लेते हैं तो दोनों मार्ग हमारे लिए खुल जाते हैं, और हम मसीह को ग्रहण करने या ठुकराने का चुनाव कर सकते हैं।

तीसरा प्रमुख दृष्टिकोण सहमत होता है कि पवित्र आत्मा हमें सुसमाचार से भेंट करने के लिए प्रेरित करता है और कि हममें जीवन का चुनाव करने की स्वाभाविक योग्यता नहीं होती। परंतु इस

दृष्टिकोण में पवित्र आत्मा उन्हें "अनिवार्य अनुग्रह" प्रदान करता है जिनका उद्धार करने का वह चुनाव करता है। यह अनुग्रह न केवल हमें उद्धार के मार्ग को चुनने के *योग्य बनाता है* बल्कि यह भी *निश्चित करता है* कि हम उस मार्ग को ही चुनें।

स्पष्ट रूप से, इन दृष्टिकोणों के बीच महत्वपूर्ण असहमतियाँ पाई जाती हैं। फिर भी, ये तीनों मनुष्यों के जीवनों पर पवित्र आत्मा के प्रभाव और संचालन की पुष्टि करते हैं, और एक सीमा तक हमारे द्वारा किए गए चुनावों पर भी।

> यीशु संसार में लोगों के जीवनों में पवित्र आत्मा की महत्वपूर्ण सेवकाई पर बल देता है, जिनमें ऐसे लोग भी शामिल हैं जो परमेश्वर के विरोधी होते हैं। पवित्र आत्मा अविश्वासियों, अर्थात् लोगों को कायल करने के कार्य में लगा है जो परमेश्वर के विरोधी हैं, उन्हें अपने दोष पर ध्यान देने हेतु कायल करने के लिए, इस बात पर ध्यान देने के लिए कि वे पाप, स्व-धार्मिकता और सांसारिक न्याय के संबंध में कहाँ गलत हैं। कहने का अर्थ है कि आत्मा अविश्वासियों को यह समझने में सहायता करता है कि उन्होंने अपने उद्धार की एकमात्र आशा यीशु मसीह पर कभी विश्वास नहीं किया है। और आत्मा इस बात पर बल देता है कि बहुत से अविश्वासी उद्धार पाने के लिए परमेश्वर की कृपा या प्रेम को अर्जित करने हेतु अपनी स्व-धार्मिकता पर भरोसा करते है, जो कि असंभव है... इसलिए आत्मा यह दर्शाते हुए अविश्वासियों के बीच ईश्वरीय हस्तक्षेप के साथ कार्य करता है कि वे अपने पाप में लिप्त हैं, कि वे स्व-धर्मी हैं, कि वे न्याय के सांसारिक रूप में लगे हुए हैं, और यह सब गलत है। और वह उन्हें विवश करता है, प्रेरित करता है कि वे यीशु मसीह को ग्रहण करें... अतः पवित्र आत्मा अविश्वासियों को कायल करने के लिए और उन्हें नया जन्म प्रदान करने के लिए उनके जीवनों में सामर्थ्य के साथ कार्य करता है।
>
> — डॉ. ग्रेग आर. एलीसन

सृष्टि और नियति विधान के संबंध में संसार में पवित्र आत्मा के कार्य पर विचार कर लेने के बाद, अब हम प्रकाशन की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

प्रकाशन

प्रकाशन को परिभाषित करने के कई तरीके हैं। परंतु आम तौर पर, हम कह सकते हैं कि यह :

> मनुष्यों के बीच स्वयं को प्रकट करने का परमेश्वर का कार्य है।

प्रकाशन वास्तव में नियति विधान की उपश्रेणी ही है क्योंकि यह उस तरीके का ही भाग है जिसमें पवित्र आत्मा सामान्य रूप में सृष्टि को संचालित करता है, विशेषकर मनुष्यों को। और प्रकाशन कई रूप लेता है। हम सृष्टि पर ध्यान देने के द्वारा परमेश्वर के विषय में सीख सकते हैं। हम स्वयं में और अन्य लोगों में परमेश्वर की विशेषताओं को प्रदर्शित होते देख सकते हैं। वह स्वर्गदूतों के रूप में संदेशवाहकों, या मानवीय सुसमाचार-प्रचारकों और शिक्षकों को भेज सकता है। वह दर्शन, श्रवण और स्वप्न प्रदान कर सकता है। उसने पवित्रशास्त्र में अपना वचन हमें दिया है। और वह आंतरिक अगुवाई और प्रज्वलन के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

द्वारा सीधे हमारे हृदयों से बात कर सकता है ताकि वह पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने और उसे लागू करने में हमारी सहायता करे।

हम पवित्र आत्मा के प्रकाशन के कार्य पर दो भागों में चर्चा करेंगे। पहला, प्रकाशन को श्रेणीबद्ध करने के लिए कुछ धर्मवैज्ञानिक आदर्शों का सर्वेक्षण करेंगे। और दूसरा, हम उसे देखेंगे जो बाइबल प्रकाशन के स्रोत के रूप में पवित्र आत्मा की भूमिका के विषय में कहती है। आइए पहले हम प्रकाशन को श्रेणीबद्ध करने के लिए कुछ धर्मवैज्ञानिक आदर्शों को देखें।

आदर्श

धर्मविज्ञानियों ने पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किए गए प्रकाशन को श्रेणीबद्ध करने के लिए कई पद्धतियों की रचना की है। परंतु इस अध्याय में अपने उद्देश्यों के लिए हम अपने विचार-विमर्श को पाँच सामान्य आदर्शों तक सीमित रखेंगे।

प्राकृतिक और अलौकिक प्रकाशन

धर्मविज्ञानियों द्वारा दर्शाई गई एक आरंभिक भिन्नता प्राकृतिक और अलौकिक प्रकाशन के बीच थी। इस अध्याय में हम "प्राकृतिक प्रकाशन" नामक शब्द-समूह का प्रयोग परमेश्वर के उस ज्ञान को दर्शाने के लिए करेंगे जो प्राकृतिक संसार और नियति विधान की सामान्य गतिविधियों के द्वारा आता है। इसमें सृष्टि का प्रत्येक प्राणी, वस्तु, तत्व और सिद्धांत शामिल होता है। उदाहरण के लिए, भजन 19:1 इस रीति से प्राकृतिक प्रकाशन के बारे में बात करता है :

> आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है (भजन 19:1)।

इसके विपरीत, अलौकिक प्रकाशन परमेश्वर का वह ज्ञान है जो सीधे परमेश्वर, या उसके संदेशवाहकों की ओर से आता है। इसमें आश्चर्यकर्म, भविष्यवाणी, पवित्रशास्त्र से प्रेरणा, और प्रत्येक ईश्वरीय हस्तक्षेप और नियति विधान का प्रत्येक विशेष कार्य शामिल होता है।

प्राकृतिक और अलौकिक प्रकाशन के बीच का अंतर उचित रूप में यह स्वीकार करता है कि परमेश्वर प्रकाशन के कई अलग-अलग माध्यमों का प्रयोग करता है। इनमें प्राकृतिक ब्रह्मांड, स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं का अप्राकृतिक क्षेत्र, और मनुष्यों के साथ प्रत्यक्ष संवाद शामिल होता है। यह इस बात को भी स्वीकार करता है कि क्योंकि परमेश्वर ने सब विद्यमान वस्तुओं की रचना की है इसलिए सब कुछ और प्रत्येक व्यक्ति उसके विषय में कुछ न कुछ प्रकट करता है। फिर भी, इसमें इस बात को नजरअंदाज करने की कमजोरी है कि *सब* प्रकाशन अंततः अलौकिक है। आख़िरकार प्राकृतिक संसार की रचना परमेश्वर के द्वारा की गई थी और यह बने रहने और संचालित होने के लिए परमेश्वर के नियति विधान पर निर्भर रहता है।

क्योंकि पवित्र आत्मा संपूर्ण प्रकाशन का परम स्रोत है, इसलिए प्राकृतिक और अलौकिक प्रकाशन के बीच एक कड़ी के आधार पर सोचना सहायक होता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर की ओर से एक सीधा, सुना जानेवाला वचन बहुत ही अलौकिक होगा। एक प्रेरणा-प्राप्त मानवीय भविष्यवक्ता कुछ हद तक कम अलौकिक होगा। और प्राकृतिक ब्रह्मांड में परमेश्वर के रचनात्मक हाथ को देखना सबसे कम अलौकिक होगा।

छुटकारे-संबंधी और गैर छुटकारे-संबंधी प्रकाशन

प्रकाशन का वर्णन करने के लिए कभी-कभी प्रयोग की जानेवाली श्रेणियों का दूसरा समूह छुटकारे-संबंधी और गैर छुटकारे-संबंधी प्रकाशन है। छुटकारे-संबंधी प्रकाशन परमेश्वर का ज्ञान है जिसका उद्देश्य मसीह के द्वारा उद्धार को पूरा करना है। उदाहरण के लिए, इस ज्ञान को कि परमेश्वर दयालु और क्षमाशील है सामान्यतः छुटकारे-संबंधी ज्ञान माना जाता है क्योंकि यह मनुष्यजाति की छुटकारे की जरूरत को पहले से जान लेता है। यदि हमने कभी पाप न किया होता तो हमें दया या क्षमा की जरूरत नहीं होती। परंतु गैर छुटकारे-संबंधी प्रकाशन परमेश्वर का वह ज्ञान है जो पापमयता या छुटकारे पर ध्यान नहीं देता। उदाहरण के लिए, इस ज्ञान को कि परमेश्वर सर्व-शक्तिमान सृष्टिकर्ता है, गैर छुटकारे-संबंधी माना जाएगा क्योंकि यह हमें हमारी पापमयता या छुटकारे की हमारी जरूरत के बारे में नहीं सिखाता। परमेश्वर की सामर्थ्य हमारी पापमयता की परवाह किए बिना एक-सी बनी रहती है।

यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि कई प्रकार के ज्ञान एक दृष्टिकोण से गैर छुटकारे-संबंधी तो दूसरे दृष्टिकोण से छुटकारे-संबंधी होते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर की महिमा — आम तौर पर गैर छुटकारे-संबंधी — एक पापी को मन फिराव की ओर प्रेरित करनेवाला नम्रतापूर्ण अनुभव हो सकता है। यही नहीं, छुटकारे-संबंधी ज्ञान केवल उनके लिए छुटकारेपूर्ण है जो मन फिराते हैं। जो ऐसा नहीं करते, उनके लिए यह उनके दंड के एक और माध्यम के रूप में कार्य करता है। हम इसे मत्ती 11:21, 22, और यशायाह 6:9, 10 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं।

सामान्य और विशेष प्रकाशन

कई धर्मविज्ञानियों द्वारा प्रयोग किया जानेवाला श्रेणियों का एक तीसरा समूह सामान्य और विशेष प्रकाशन का है। सामान्य और विशेष प्रकाशन को अलग-अलग धर्मविज्ञानियों के द्वारा अलग-अलग तरह से परिभाषित किया गया है। कुछ धर्मविज्ञानी अपनी भिन्नता को उस माध्यम पर केंद्रित करते हैं जिसके द्वारा प्रकाशन दिया जाता है।

इस दृष्टिकोण में, सामान्य प्रकाशन लगभग प्राकृतिक प्रकाशन के समान होता है क्योंकि यह प्राकृतिक माध्यम के द्वारा आता है। और विशेष प्रकाशन लगभग अलौकिक प्रकाशन के तुल्य होता है क्योंकि यह अलौकिक या अप्राकृतिक माध्यम के द्वारा आता है।

अन्य परंपराओं में ध्यान उन श्रोताओं पर होता है जो प्रकाशन को प्राप्त करते हैं। सामान्य प्रकाशन सामान्य मनुष्यों के लिए होता है ताकि यह सबके लिए उपलब्ध हो सके, वहीं विशेष प्रकाशन केवल कुछ चुनिंदा लोगों के लिए ही उपलब्ध होता है।

यह आदर्श उचित रूप से पहचानता है कि सब लोग परमेश्वर से समान प्रकाशन को प्राप्त करते हैं क्योंकि हमारे जीवनों में, हमारे इतिहास में, और यहाँ तक कि प्रकाशन को प्राप्त करने की हमारी योग्यता में स्पष्ट भिन्नताएँ पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, जो अंधे हैं वे सामान्य प्रकाशन के दृश्य पहलुओं को प्रत्यक्ष रीति से प्राप्त नहीं कर सकते। और कुछ विशेष प्रकाशन, जैसे कि पवित्रशास्त्र, का उद्देश्य संभावित रूप से सबके समक्ष प्रस्तुत करने का होता है।

इन श्रेणियों का एक और दृष्टिकोण सामान्य और विशेष प्रकाशन की विषय-वस्तु के बीच अंतर स्पष्ट करता है। यह दृष्टिकोण गैर छुटकारे-संबंधी और छुटकारे-संबंधी प्रकाशन से मिलता-जुलता है। इस दृष्टिकोण में, सामान्य प्रकाशन पाप और उद्धार के विषयों की परवाह किए बिना सब मनुष्यों के लिए है। इसी प्रकार, विशेष प्रकाशन पापियों के एक चुने हुए समूह को दिया जाता है जिनके लिए परमेश्वर ने उद्धार को रखा है।

इसमें परमेश्वर द्वारा उद्धार के लिए कुछ लोगों को चुनने की बात को स्वीकार करने का लाभ है, जैसा कि पौलुस ने रोमियों 8:29, 30, और इफिसियों 1:5, 11 में सिखाया है। यह इन लोगों को मसीह में

विश्वास और परिपक्वता में लाने हेतु विशेष क़दमों को उठाने के लिए परमेश्वर के दृढ़-संकल्प पर बल देता है। परंतु इसमें कुछ कमजोरियाँ भी हैं। उदाहरण के लिए, वह प्रकाशन जो पापियों को दोषी ठहराता है वह सामान्य नहीं है क्योंकि यह पाप पर ध्यान केंद्रित करता है। और यह विशेष भी नहीं है क्योंकि इसका उद्देश्य अनिवार्य रूप से किसी का उद्धार करने का भी नहीं है।

कार्य और वचन प्रकाशन

पवित्र आत्मा के प्रकाशन को श्रेणीबद्ध करने के लिए धर्मविज्ञानी जिस चौथे आदर्श का प्रयोग करते हैं, वह कार्य और वचन प्रकाशन है। कार्य प्रकाशन परमेश्वर के कार्यों और क्रिया-कलापों के माध्यम से उसका स्व-प्रकाशन है। और वचन प्रकाशन प्रेरणा-प्राप्त मौखिक या लिखित वचनों के माध्यम से उसका स्व-प्रकटीकरण है।

यह भेद अक्सर सहायक होता है क्योंकि यह उन विभिन्न विधियों पर बल देता है जिनका प्रयोग परमेश्वर संवाद करने के लिए करता है। यह उचित रूप से स्वीकार करता है कि हम उसके कार्यों को देखने के द्वारा परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। परंतु क्योंकि परमेश्वर के कार्य अक्सर अनेकार्थी हो सकते हैं, इसलिए यह उसके कार्यों से अधिक उसके वचनों की स्पष्टता पर बल देता है।

इसके अतिरिक्त, यह उसके वचनों और उसके कार्यों के बीच परस्पर संबंधों को देखने में हमारी सहायता करता है, और इसमें भी कि कैसे उसके वचन कभी-कभी उसके कार्यों आदि को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिए, मरकुस 3:22 में यीशु पर शैतान के अधिकार से दुष्टात्मा-ग्रस्त लोगों को चंगा करने का आरोप लगाया गया। यह स्पष्ट है कि वास्तव में ऐसा नहीं था। वह इस कार्य को परमेश्वर की सामर्थ्य से कर रहा था। और इस कार्य ने शैतान पर पवित्र आत्मा के अधिकार को प्रकट किया। परंतु उसके श्रोताओं को यह समझ नहीं आया। अतः मरकुस 3:23-29 में यीशु का वचन प्रकाशन दुष्टात्मा को निकालने के कार्य के महत्व को समझाता है।

निस्संदेह, प्रकाशन के इस दृष्टिकोण की एक कमी यह है कि यह मुख्य रूप से परमेश्वर के नाटकीय, उद्धार-संबंधी कार्यों और उनकी व्याख्या करनेवाले वचनों पर ध्यान केंद्रित करता है। इस भाव में, यह कम महत्वपूर्ण प्रकाशन को तुच्छ जानने की प्रवृत्ति रखता है, जैसे कि प्राकृतिक संसार की रोजमर्रा की गतिविधियों में पाया जानेवाला प्रकाशन।

मध्यस्थ और अमध्यस्थ प्रकाशन

अंततः प्रकाशन को श्रेणीबद्ध करने के लिए उपयुक्त होनेवाले जिस पाँचवें आदर्श का हम उल्लेख करेंगे, वह मध्यस्थ और अमध्यस्थ प्रकाशन है। मध्यस्थ प्रकाशन हमारे पास किसी माध्यम या मध्यस्थ, जैसे सृष्टि, या भविष्यवाणिय संदेशवाहक, या पवित्रशास्त्र के द्वारा आता है। और अमध्यस्थ प्रकाशन हमारे पास सीधे परमेश्वर की ओर से आते हैं, जैसे कि स्वयं परमेश्वर का स्वाभाविक ज्ञान जो उसने सब लोगों में रखा है। अन्य प्रकार के अमध्यस्थ प्रकाशन में “प्रज्वलन” और “आंतरिक अगुवाई” शामिल होती है — अर्थात् ज्ञान या समझ के ईश्वरीय वरदान जिन्हें पवित्रशास्त्र अक्सर पवित्र आत्मा के कार्य के साथ जोड़ता है। हम इसे 1 कुरिन्थियों 2:9-16; इफिसियों 1:17; कुलुस्सियों 1:9; और 1 यूहन्ना 2:27 जैसे स्थानों में देखते हैं।

यह आदर्श हमें अपने जीवनों में पवित्र आत्मा के कार्यों के प्रति संवेदनशील बने रहने की याद दिलाता है। परंतु इसका आसानी से दुरूपयोग भी किया जा सकता है, क्योंकि बहुत से लोग आंतरिक अगुवाई और प्रज्वलन, तथा उन विचारों और मनोभावों के बीच अंतर नहीं कर सकते जो स्वाभाविक रूप से हमें प्राप्त होते हैं। और यह कुछ महत्वपूर्ण सवालों को उत्पन्न करता है : हम अपने विचारों, मनोभावों, दर्शनों, श्रवणों, स्वप्नों, और यहाँ तक कि पवित्रशास्त्र की अपनी व्याख्याओं के स्रोत को कैसे निर्धारित कर सकते हैं? हम कैसे जान सकते हैं कि वे पवित्र आत्मा से आए हैं, या शायद किसी स्वर्गदूत से, और

इसलिए क्या वे भरोसेमंद हैं? हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि हम स्वयं को धोखा नहीं दे रहे हैं, और न ही किसी दुष्टात्मा से धोखा खा रहे हैं?

प्रेरितों के काम 17:11, और 1 यूहन्ना 4:1 जैसे अनुच्छेद हमें चेतावनी देते हैं कि हमें ऐसे ही विश्वास नहीं कर लेना चाहिए कि प्रत्येक प्रकाशन, प्रज्वलन, व्याख्या, और परंपरा पवित्र आत्मा की ओर से है। वास्तव में, वे चाहते हैं कि हम संदेहवादी बनें, और हम प्रत्येक आत्मा को परखें और यह जाँचें कि वे परमेश्वर और पवित्रशास्त्र के अनुसार हैं या नहीं।

प्रकाशन के इन आदर्शों को मन में रखते हुए, आइए हम प्रकाशन के स्रोत के रूप में पवित्र आत्मा पर विचार-विमर्श करें।

स्रोत

प्रकाशन के सब धर्मवैज्ञानिक आदर्शों में जो एक बात समान है, वह यह है कि वे परमेश्वर को प्रकाशन का परम स्रोत मानते हैं। क्योंकि सारा प्रकाशन परमेश्वर की ओर से है, इसलिए सारा प्रकाशन अचूक रीति से सच्चा है। और क्योंकि यह सच्चा है, इसलिए यह अधिकारपूर्ण भी है। यह हमें उन बातों पर विश्वास करने जो यह परमेश्वर के बारे में सिखाता है, और उस परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी आज्ञा मानने के द्वारा प्रत्युत्तर देने को विवश करता है जिसे यह प्रकट करता है। परंतु हम यह कैसे जान सकते हैं कि विशेषकर पवित्र आत्मा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट करने में प्रत्यक्ष रूप से शामिल है।

> पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र में संवाद के कार्य के दोनों ओर है, अर्थात् परमेश्वर की ओर से संदेश भेजने में तथा इस बात को आश्वस्त करने में कि इसे इसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर के लोगों के बीच प्राप्त कर लिया गया है। भेजने की ओर, 2 पतरस हमें बताता है कि परमेश्वर के पवित्र लोग पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित किए गए, कि पवित्र आत्मा ने उन घटनाओं की परमेश्वर की व्याख्या, अर्थात् परमेश्वर के वचन को बताने के लिए उनके जीवन के अनुभव, उनकी शिक्षा, साहित्यिक शैलियों को जानने और ऐतिहासिक परिस्थितियों में शामिल होने की उनकी योग्यताओं का प्रयोग किया। और इसलिए हम उसे "प्रेरणा की धर्मशिक्षा" कहते हैं, कि पवित्र आत्मा ने परमेश्वर के इन पवित्र लोगों को प्रेरित किया। परंतु पौलुस 1 कुरिन्थियों 2 में कुरिन्थियों को लिखते हुए यह भी बताता है कि पवित्र आत्मा कैसे मसीह की देह को शिक्षण के वरदान, परख के वरदान देने में संदेश को प्राप्त करने की ओर होता है, ताकि संदेश की व्याख्या की जा सके, आत्मिक सत्यों को आत्मिक रूपों में समझा जा सके, ताकि संदेश को प्राप्त किया जा सके और फिर परमेश्वर के लोगों के मिशन के लिए तैयारी के उद्देश्य को पूरा किया जा सके। हम इसे "प्रज्वलन की धर्मशिक्षा" कहते हैं, कहने का अर्थ है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को प्रज्वलित करता है और उन्हें वरदान प्रदान करता है ताकि पवित्र आत्मा के संदेश, अर्थात् वचन को प्राप्त किया जा सके और फिर परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उसका प्रयोग किया जा सके।
>
> — डॉ. ग्रेग पैरी

पवित्रशास्त्र कहता है कि प्रकाशन परमेश्वर की सृष्टि और नियति विधान के कार्यों के द्वारा दिया जाता है। और जैसा कि हम देख चुके हैं, पवित्र आत्मा ने इन ईश्वरीय कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है और निरंतर करता रहता है। इसके साथ-साथ, यूहन्ना 14:26; 1 कुरिन्थियों 2:4; और इफिसियों 1:17 तथा 3:5, ये सब आत्मा को हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट करनेवाला मानते हैं, जिसमें "परमेश्वर की

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

गूढ़ बातें” भी शामिल होती हैं, जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 2:10 में देखते हैं। इसी लिए यूहन्ना ने यूहन्ना 14:17, 15:26, और 16:13 में उसे “सत्य का आत्मा” कहा। और 1 यूहन्ना 5:7 में यूहन्ना ने यह तक कहा :

> और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है (1 यूहन्ना 5:7)।

पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि पवित्र आत्मा हमें प्रकाशन की हर वह श्रेणी प्रदान करता है जिसे हमने इस अध्याय में देखा है। परंतु फिर भी प्रकाशन के कुछ ऐसे प्रकारों पर विचार करना सहायक होगा जिन्हें बाइबल स्पष्ट रूप में उसके साथ जोड़ती है। समय की कमी के कारण हम केवल तीन का उल्लेख करेंगे। पहला, जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, पवित्र आत्मा भविष्यवाणी और पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के लिए उत्तरदाई है।

भविष्यवाणी और पवित्रशास्त्र की प्रेरणा

भविष्यवाणी और पवित्रशास्त्र की आत्मा की प्रेरणा का उल्लेख प्रेरितों के काम 1:16, 4:25, और 28:25; इफिसियों 3:4, 5; तथा इब्रानियों 9:8 जैसे स्थानों पर किया गया है। यह 1 कुरिन्थियों 14:1 में उल्लिखित भविष्यवाणी के आत्मिक वरदान में, और यूहन्ना 14:26 में वर्णित प्रेरितों के द्वारा आत्मा की सेवकाई में भी स्पष्ट है। केवल एक उदाहरण के तौर पर, याद करें पतरस ने 2 पतरस 1:20-21 में क्या लिखा :

> पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे (2 पतरस 1:20-21)।

> हम बाइबल में पढ़ते हैं कि पवित्रशास्त्र को वर्तमान रूप में लाने के लिए मानवीय लेखकों ने पवित्र आत्मा के साथ परस्पर कार्य किया। ऐसे बहुत से स्थान हैं जहाँ नए नियम में उसका उल्लेख किया गया है, पर शायद उसका सबसे स्पष्ट वर्णन 2 पतरस 1 में है जहाँ पतरस प्रकाशन के बारे में बात करते हुए अंधकार में ज्योति के चमकने की बात करता है, और फिर पद 21 में यह कहते हुए आगे बढ़ता है, “क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।” और आप वहाँ मनुष्यजाति — मनुष्य को प्रेरणा दिए जाने — और पवित्र आत्मा, जो प्रेरणा दे रहा है, के बीच परस्पर कार्य को देखते हैं... और हमारे पास पवित्रशास्त्र में पूर्ण मानवीय वचन और पूर्ण ईश्वरीय वचन हैं जिससे मनुष्यों के द्वारा लिखे गए वचन हमारे लाभ के लिए परमेश्वर के हस्तक्षेप से आत्मा से परिपूर्ण, प्रेरणा-प्राप्त, और अचूक बन जाते हैं।
>
> — डॉ. साइमन विबर्ट

दूसरा, पवित्र आत्मा प्रज्वलन और आंतरिक अगुवाई से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

प्रज्वलन और आंतरिक अगुवाई

हमने अमध्यस्थ प्रकाशन की अपनी चर्चा में प्रज्वलन और आंतरिक अगुवाई का उल्लेख किया था। जहाँ ये वरदान पवित्रशास्त्र में सदैव एक दूसरे से भिन्न नहीं होते, फिर भी हम उनके बीच अंतर कर सकते हैं। “प्रज्वलन” ज्ञान या समझ का ईश्वरीय वरदान है जो प्राथमिक रूप से *बौद्धिक* है। और

"आंतरिक अगुवाई" ज्ञान और समझ का ऐसा ईश्वरीय वरदान है जो प्राथमिक रूप से *भावनात्मक* या *अंतर्ज्ञानी* है। 1 कुरिन्थियों 2:9-16 में पौलुस ने आत्मा के प्रज्वलन और आंतरिक अगुवाई का वर्णन अपने लोगों के समक्ष परमेश्वर के मन और विचारों के प्रकाशन के रूप में किया। पौलुस ने कहा कि क्योंकि आत्मा स्वयं परमेश्वर है, इसलिए वह परमेश्वर के मन और विचारों को जानता है। और वह उन्हें विश्वासियों के समक्ष प्रकट करता है ताकि हम हमारे लिए परमेश्वर के भले वरदानों को समझ सकें।

निस्संदेह, हम सृष्टि और पवित्रशास्त्र जैसे अन्य कई माध्यमों के द्वारा परमेश्वर के बारे में सीख सकते हैं। परंतु 1 कुरिन्थियों 2 में पौलुस ने दर्शाया कि पवित्र आत्मा विश्वासियों को सीधे-सीधे बुद्धि और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो हमें आत्मा के अन्य प्रकाशन को उचित रूप में समझने में योग्य बनाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हमारे पास परमेश्वर के वचनों को बोलने और उनकी व्याख्या करने का वही अधिकार है जो प्रेरितों के पास था। इसके विपरीत, यूहन्ना 14:26, और इफिसियों 3:3-5 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं कि प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के पास अद्वितीय अधिकार और अंतर्दृष्टि थी। फिर भी, आंतरिक अगुवाई और प्रज्वलन के द्वारा आत्मा अब भी हमें अपने प्रकाशन का बौद्धिक और भावनात्मक ज्ञान प्रदान करता है। हम ऐसी ही बात इफिसियों 1:17-18 में देखते हैं, जहाँ पौलुस ने यह लिखा :

> [मैं] अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूँ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे, और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों (इफिसियों 1:17-18)।

इस अनुच्छेद में पौलुस ने दर्शाया कि पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर को बेहतर रीति से जानने में हमारी सहायता के लिए प्रज्वलन, और हमारे हृदयों को ज्योतिर्मय करने के लिए आंतरिक अगुवाई प्रदान करता है। हम इस विचार को कुलुस्सियों 1:9; और 1 यूहन्ना 2:27 में देखते हैं।

तीसरा, पवित्र आत्मा के साथ जुड़ा प्रकाशन का सबसे सामान्य प्रकार आश्चर्यकर्मों, चिह्नों और चमत्कारों की श्रेणी है।

आश्चर्यकर्म, चिह्न और चमत्कार

पवित्रशास्त्र में आश्चर्यकर्म, चिह्न और चमत्कार पवित्र आत्मा के द्वारा किए गए नियति विधान के विशेष कार्य थे। पवित्रशास्त्र कई अनुच्छेदों में इन कार्यों को सीधे-सीधे आत्मा के व्यक्तित्व के साथ जोड़ता है, जैसे कि रोमियों 15:19; 1 कुरिन्थियों 12:7-11; और गलातियों 3:5। और यह हमें देखने में सहायता करता है कि पुराने और नए नियम के इन असाधारण कार्यों के पीछे की सामर्थ्य आत्मा है, तब भी जब नाम के साथ उल्लेख न किया गया हो। यही नहीं, बाइबल दर्शाती है कि इन आश्चर्यकर्मों, चिह्नों और चमत्कारों का उद्देश्य मनुष्यजाति के प्रति परमेश्वर के वचन की पुष्टि करना था — विशेषकर अविश्वासी लोगों के प्रति। जैसे कि हम इब्रानियों 2:4 में पढ़ते हैं :

> परमेश्वर... चिह्नों, और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ्य के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बाँटने के द्वारा [उद्धार की] गवाही देता रहा (इब्रानियों 2:4)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, पवित्र आत्मा ने सुसमाचार की गवाही देते हुए प्रकाशन के रूप में आश्चर्यकर्म, चिह्न और चमत्कार प्रदान किए।

पुराना और नया नियम दोनों आश्चर्यकर्मों, चिह्नों और चमत्कारों के प्रकाशन-संबंधी कार्य की पुष्टि करते हैं। उदाहरण के लिए, निर्गमन 4 में आत्मा ने छड़ी के सांप में बदलने और कोढ़ को उत्पन्न तथा चंगा करने सहित मूसा के द्वारा चिह्न प्रदान किए। और उसने ऐसा इस्राएल को आश्वस्त करने के लिए किया कि मूसा को ही उनकी अगुवाई करनी थी। मिस्र पर डाली गई विपत्तियों का उद्देश्य फिरौन और उसके देश के

समक्ष प्रमाणित करना था कि इस्राएल का परमेश्वर सच्चा परमेश्वर था। इसलिए उन्हें निर्गमन 7:3, और 10:1, 2 जैसे स्थानों में चिह्न और चमत्कार कहा जाता है। इस्राएल के जंगल में भटकने के दौरान आत्मा के द्वारा किए गए चमत्कारों को गिनती 14:22 में आश्चर्यकर्म कहा गया है क्योंकि उन्होंने प्रमाणित किया कि इस्राएल को प्रतिज्ञा के देश में पहुँचने के लिए मूसा का अनुसरण करना चाहिए। व्यवस्थाविवरण 4:34, और पुस्तक के अन्य स्थान इस्राएल के निर्गमन से चिह्नों और अद्भुत कार्यों को परमेश्वर की वाचाई भलाई और विश्वासयोग्यता के प्रमाण के रूप में दर्शाते हैं। और 2 शमूएल 7:23 में प्रतिज्ञा के देश पर इस्राएल की विजय में चिह्न और चमत्कार शामिल थे जिन्होंने प्रमाणित किया कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा की और कनानियों के झूठे देवताओं को पराजित किया।

पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं और अन्यों को भी सामर्थ्य दी कि वे ऐसे चमत्कारी चिह्नों और अद्भुत कार्यों को करें जो उनके संदेशों के सत्य को प्रमाणित करें। उदाहरण के लिए, दानिय्येल 4:2, 3 दर्शाते हैं कि राजा नबूकदनेस्सर के स्वप्न चिह्न और चमत्कार थे, जैसे कि उसका पागलपन और फिर बाद की पुनर्स्थापना थी। उसके स्वप्नों ने नबूकदनेस्सर के भविष्य के विषय में परमेश्वर की भविष्यवाणी की पुष्टि की। और उसके पागलपन ने प्रमाणित किया कि परमेश्वर नबूकदनेस्सर की सफलता का स्रोत था। शेरों से दानिय्येल की रक्षा को दानिय्येल 6:27 में चिह्न और चमत्कार कहा जाता है क्योंकि इन्होने भविष्यवाणिय सेवकाई को प्रमाणित किया।

नए नियम में पवित्र आत्मा ने इसी रीति से "चिह्नों और चमत्कारों" का प्रयोग किया। उदाहरण के लिए, सुसमाचार — विशेषकर यूहन्ना का सुसमाचार — यीशु के आश्चर्यकर्मों को "चिह्न"" कहते हैं क्योंकि उन्होंने उसके संदेश को प्रमाणित किया। हम इसे मत्ती 12:39; लूका 11:29; और यूहन्ना 2:11, 23, 3:2, 4:54, और इस पुस्तक के अन्य कई स्थानों में देखते हैं।

> यूहन्ना का सुसमाचार अक्सर यीशु के आश्चर्यकर्मों को यह दिखाने के लिए "चिह्न" के रूप में दर्शाता है कि वे सामर्थ्य के प्रकटीकरण ही नहीं हैं, उनका उद्देश्य आश्चर्य और विस्मय को उत्पन्न करना ही नहीं है.. बल्कि उन दोनों का प्रयोग यूहन्ना और अन्य सुसमाचारों में यीशु के चिह्नों और चमत्कारों तथा सामर्थ्य के कार्यों का वर्णन करने के लिए किया गया है। परंतु यूहन्ना चिह्नों पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि वह जानता है कि ये आश्चर्यकर्म उनसे ऊपर की बातों को दर्शाते हैं। पानी को दाखरस में बदलना विवाह के भोज में उन लोगों को लज्जित होने से बचाने के लिए जिन्हें और अधिक दाखरस का प्रबंध करना चाहिए था उस आवश्यकता को पूरी करने से कहीं अधिक था। यह वास्तव में एक संकेत है कि यशायाह 25 में जिसकी भविष्यवाणी की गई थी वह मसीहा-संबंधी भोज शुरू हो रहा है। या बहुत ही स्पष्ट रूप से, जब यीशु रोटियों को बढ़ा रहा है, तो पांच हजार लोगों को भोजन खिलाना यीशु को एक बड़े वार्तालाप की ओर लेकर चलता है जिसमें वह दिखाता है कि जो रोटी हम खाते हैं और हमारी देहों में भरते हैं वह हमें केवल कुछ ही समय के लिए तृप्त करता है, परंतु पिता स्वर्ग से एक सच्ची, अनंत जीवनदायक रोटी प्रदान करता है और कि स्वयं यीशु जीवन की रोटी है। या फिर, लाज़र का पुनरुत्थान। लाज़र को मरे हुओं से जिलाया गया, इस संसार में भौतिक रूप से फिर से जीवन प्रदान किया गया, परंतु यीशु मार्था से कहता है कि यह चिह्न वास्तव में इस बात की ओर संकेत करता है कि स्वयं यीशु पुनरुत्थान और जीवन है। और यूहन्ना के सुसमाचार में पहले, अर्थात् अध्याय 5 में यीशु वर्तमान दिन को ऐसे दिन के रूप में बताता है जब लोग परमेश्वर के पुत्र की वाणी को सुनते हैं, मृतक जीवन को प्राप्त करते हैं। यह सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर में लोगों को विश्वास और जीवन की ओर लाने में आत्मा की जीवनदायक सामर्थ्य है, और एक

> ऐसा दिन भी आएगा जब कब्र में पड़े हुए सब लोग जो भौतिक रूप से मर चुके है, जी उठेंगे, या तो दंड का सामना करने के लिए यदि उन्होंने पुत्र पर विश्वास नहीं किया है, या फिर अनंत जीवन के लिए क्योंकि पुत्र जीवन प्रदान करता है।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

यीशु के आश्चर्यकर्म ऐसे चिह्न और चमत्कार थे जिन्होंने उसके व्यक्तित्व और उसके संदेश के सत्य की गवाही दी। निस्संदेह, स्वयं परमेश्वर होने के रूप में यीशु जो चाहे वह आश्चर्यकर्म कर सकता था। परंतु उसने ऐसा नहीं किया। इसकी अपेक्षा, यीशु अपने आश्चर्यकर्मों के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भर रहा। और उसने ऐसा इसलिए किया ताकि उसके सुसमाचार की पुष्टि पवित्र आत्मा की गवाही के द्वारा हो। यह मत्ती 12:18, 28; और लूका 4:14, 18 जैसे अनुच्छेदों में स्पष्ट है। और प्रेरितों के काम 2:22 में पतरस के शब्दों को सुनिए :

> यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिह्नों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच... दिखाए (प्रेरितों के काम 2:22)।

यीशु का कार्य वैध गवाही था क्योंकि उसने उसे अपनी सामर्थ्य के द्वारा नहीं किया। उसने इसे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा किया।

प्रेरितों के काम की पुस्तक ऐसे कई अन्य चिह्नों और चमत्कारों का उल्लेख भी करती है जिनका प्रयोग पवित्र आत्मा ने सुसमाचार की गवाही देने के लिए किया। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 2:43, और 5:12, कहते हैं कि प्रेरितों ने बहुत से आश्चर्यकर्मों और सामर्थी चिह्नों को प्रकट किया। और इन आश्चर्यकर्मों ने कलीसिया के बाहर के लोगों के बीच भी उन्हें बहुत प्रसिद्ध बना दिया। आगे प्रेरितों के काम 4:30 में कलीसिया ने प्रार्थना की कि परमेश्वर यीशु की गवाही के रूप में उनके द्वारा चिह्न और चमत्कार करे। और प्रेरितों के काम की पुस्तक की अन्य घटनाएँ दर्शाती हैं कि परमेश्वर ने इस प्रार्थना का सकारात्मक उत्तर दिया।

पवित्र आत्मा सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का प्रयोग हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट करने के लिए करता है। और कई बार वह मनुष्यों के साथ सीधे-सीधे बात भी करता है। और यह विश्वासियों के लिए अच्छी खबर है। इसका अर्थ है कि जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो मनुष्य के भीतर कुछ ऐसा होता है जो हमारी बातों के सत्य को पहचानता है। और इसका अर्थ है जिस किसी बात का हम सामना करते हैं वह परमेश्वर के साथ तथा अन्य लोगों के साथ हमारे संबंध के लिए कुछ बहुमूल्य बातें सिखा सकता है। निस्संदेह, आत्मा के द्वारा हमें दिया गया सबसे बहुमूल्य प्रकाशन पवित्रशास्त्र है। और हम जिस किसी प्रकाशन को पाते हैं उसकी व्याख्या करने का मार्गदर्शक यही होना चाहिए। अंततः सही तरीके से व्याख्या किए गए संपूर्ण प्रकाशन का समान लक्ष्य होता है। यह परमेश्वर की महिमा की घोषणा करता है, और हमें मन फिराने तथा मसीह पर विश्वास करने के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाने के लिए प्रेरित करता है।

संसार में पवित्र आत्मा के कार्य पर आधारित हमारे अध्याय में हमने अब तक सृष्टि, नियति विधान और प्रकाशन के उसके कार्य को स्पष्ट किया है। आइए अब हम अपने अंतिम मुख्य विषय, सामान्य अनुग्रह, की ओर मुड़ते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

सामान्य अनुग्रह

शब्द “सामान्य अनुग्रह” इस तथ्य से संबंधित बाइबल की विविध शिक्षाओं की ओर संकेत कर सकता है कि पापी, उद्धार न पाए हुए लोग भी सकारात्मक मानवीय जीवन और संस्कृति को प्राप्त कर सकते हैं। उत्पत्ति 3 और रोमियों 5 सिखाते हैं कि जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो संपूर्ण मानवजाति शापित हो गई और पाप के दासत्व में चली गई। परंतु उद्धार न पाए हुए, पापी मनुष्य उतने बुरे नहीं हैं जितने वे हो सकते थे। वे पूरी तरह से बुरे और दुष्ट नहीं हैं। वे दूसरों की सहायता करते हैं। वे अपने बच्चों से प्रेम करते हैं। वे सुंदर कलाकृतियाँ बनाते हैं। वे गणित, चिकित्सा आदि में सच्चे और सहायक अनुसंधान करते हैं। परंतु यह कैसे हो सकता है? जबकि छुटकारा न पाए हुए मनुष्य पाप के दास हैं, फिर भी वे सत्य, भलाई और सुंदरता को कैसे प्रकट करते हैं? इसका उत्तर है “सामान्य अनुग्रह।”

सन् 1873–1957 के दौरान रहे लुइस बेर्खोफ़ ने अपनी पुस्तक *सिस्टेमेटिक थियोलोजी* के भाग 4, अध्याय 3, खंड ख, अनुच्छेद 2 में सामान्य अनुग्रह के विचार को सारगर्भित किया। सुनिए वहाँ उसने क्या कहा :

> जब हम “सामान्य अनुग्रह” के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में इन दोनों में से कोई एक बात होती है : या तो पवित्र आत्मा के वे सामान्य कार्य जिनमें वह हृदयों को बिना बदले अपने सामान्य या विशेष प्रकाशन के द्वारा मनुष्य पर ऐसा नैतिक प्रभाव डालता है कि सामाजिक जीवन में पाप रुक जाता है और व्यवस्थित क्रम बना रहता है, और सामान्य धार्मिकता बढ़ती है; या फिर वर्षा और धूप, भोजन और पानी, कपड़े और घर जैसी सामान्य आशीषें जो परमेश्वर जहाँ चाहे और जितनी मात्रा में चाहे बिना भेदभाव किए सब लोगों को देता है।

बेर्खोफ़ ने सामान्य अनुग्रह के दो प्रमुख प्रकारों का उल्लेख किया। पहला, उसने उन आशीषों का उल्लेख किया जो बुराई को रोकती हैं, जिससे “सामाजिक जीवन में पाप रुक जाता है और व्यवस्थित क्रम बना रहता है, और सामान्य धार्मिकता बढ़ती है।” और दूसरा, बेर्खोफ़ ने ऐसी आशीषों का वर्णन किया जो मनुष्यजाति की दैनिक जरूरतों, जैसे कि “वर्षा और धूप, भोजन और पानी, कपड़े और घर” को पूरा करती हैं।

अन्य कई धर्मवैज्ञानिक धारणाओं के समान विभिन्न परंपराएँ विभिन्न तरीकों में सामान्य अनुग्रह को परिभाषित करती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग इसमें जीवन के ही वरदान को शामिल करके इसे परिभाषित करते हैं। अन्य लोग सोचते हैं कि इसमें पापियों के हृदयों को नरम करना शामिल होता है ताकि वे सकारात्मक रूप से सुसमाचार का प्रत्युत्तर दे सकें। और कुछ परंपराएँ इस शब्द का प्रयोग ही नहीं करतीं। वे मानती हैं कि यदि पवित्र आत्मा के कार्य का अंतिम परिणाम हमारे उद्धार के रूप में नहीं निकलता, तो इसे उचित रूप से “अनुग्रह” नहीं कहा जा सकता। फिर भी, इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए हम भलाई को बढ़ाने में, तथा दैनिक मानवीय जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में पवित्र आत्मा के विधानीय कार्य पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा सामान्य अनुग्रह के बेर्खोफ़ के विचार का अनुसरण करेंगे।

इस दृष्टिकोण की समानता में सामान्य अनुग्रह पर हमारा विचार-विमर्श दो विचारों पर केंद्रित होगा। पहला, हम पवित्र आत्मा के भलाई को बढ़ाने के कार्य को देखेंगे। और दूसरा, हम जीवन को बढ़ाने के उसके कार्य को संबोधित करेंगे। आइए पहले हम मनुष्यों में भलाई को बढ़ाने के आत्मा के कार्य को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

भलाई को बढ़ाना

> पवित्र आत्मा सदैव उपस्थित और सक्रिय रहता है। वह हमेशा से संसार में उपस्थित और सक्रिय रहा है। इस संसार में उसका एक कार्य, उसका एक काम उसे बढ़ाना है जो भला है, और उसे रोकना है जो बुरा है। और मेरे विचार में इस प्रश्न का सबसे सरल उत्तर कि वह यह कैसे करता है और हम कैसे जानते हैं वह यह करता है, यह कहना है कि संसार, अर्थात् पतित संसार और भी अधिक बुरा होता यदि संसार में आत्मा की रोकने की सामर्थ्य की उपस्थिति नहीं होती, और यह वर्तमान से और भी कम भला होता यदि आत्मा संसार में उपस्थित और सक्रिय नहीं होता। धर्मविज्ञानी परमेश्वर के विशेष अनुग्रह और परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह के बारे में बात करते हैं, और परमेश्वर का सामान्य अनुग्रह सबके लिए उपलब्ध है ताकि जो लोग ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ आत्मा उपस्थित है, ऐसी कुछ भलाइयों का अनुभव करें जो उसकी ओर से आती हैं, और उसके द्वारा बुराई को रोकने के लाभों को प्राप्त करें। सब परंपराओं के मसीही उसके बारे में एक और बात कहेंगे, वह यह कि हम एक ऐसे दिन की बाट जोह रहे हैं जहाँ कोई बुराई नहीं होगी और जब परमेश्वर के द्वारा रचे संसार में भलाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा।
>
> — डॉ. ग्लेन आर. क्रीडर

मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर का प्राथमिक उद्देश्य यह है कि हम संसार को उसके पृथ्वी पर के राज्य में बदल दें। यह पवित्रशास्त्र के पहले ही अध्याय में मनुष्यजाति की सृष्टि से स्पष्ट है। उत्पत्ति 1:26-28 में परमेश्वर ने मनुष्यजाति को पृथ्वी को भरने और उस पर अधिकार करने के द्वारा उसके बदले सृष्टि पर शासन करने का कार्य दिया। इस अनुच्छेद को आम तौर पर “सांस्कृतिक आदेश” के रूप में माना जाता है क्योंकि यह पूरे संसार में मानवीय संस्कृति और समुदाय की स्थापना का आदेश देता है।

परमेश्वर के राज्य पर दिया गया यही बल पूरे पवित्रशास्त्र में दोहराया गया है। और अंततः इसकी पूर्णता प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में होती है जहाँ परमेश्वर का राज्य पूरे संसार में फैल जाता है। इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से प्रकाशितवाक्य 11:15 में किया गया है। और प्रकाशितवाक्य 21:1–22:5 इसका एक विस्तृत विवरण प्रदान करता है कि यह राज्य कैसा दिखाई देता है : पूरा संसार परमेश्वर की सेवा करता है जो नए यरूशलेम के अपने सिंहासन से पूरी पृथ्वी पर राज्य करता है।

सृष्टि के लिए इस लक्ष्य के साथ पवित्र आत्मा विधानीय रूप में मनुष्यजाति को इस तरह से संचालित करता है जो मानवीय संस्कृति के विस्तार और उसकी स्थिरता को संभव बनाता है। उदाहरण के लिए, वह मानवीय बुराई को रोकने के लिए प्रशासनों को स्थापित करता है, जैसा कि पौलुस ने रोमियों 13:1-7 में सिखाया। वह संपूर्ण मनुष्यजाति को न्याय और विवेक का एक सामान्य भाव प्रदान करता है, जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 16:8-11 में सिखाया, और पौलुस ने रोमियों 1:32, और 2 कुरिन्थियों 4:2 में जिसकी पुष्टि की। निस्संदेह, पापी मनुष्य अक्सर परमेश्वर द्वारा प्रदान किए विवेकों के निर्णयों को ठुकरा देते हैं। परंतु ये विवेक फिर भी मानवीय जीवन और समुदाय में भलाई पर प्रभाव डालते हैं।

आत्मा मनुष्यों को पर्याप्त बुद्धि और समझ भी प्रदान करता है ताकि वे सच्ची बुद्धि की कम से कम कुछ बातों को समझ लें। उदाहरण के लिए, 1 राजाओं 10; और 2 इतिहास 9 में अन्यजाति की रानी शीबा ने सुलैमान की बुद्धि को पहचाना और उसका आदर किया। इसका अर्थ है कि पवित्र आत्मा ने उसे सुलैमान की बुद्धि को पहचानने के लिए पर्याप्त बुद्धि दी जब उसने उसे देखा। और यही बात सीखने के सब क्षेत्रों में सत्य के बारे में कही जा सकती है। जैसे कि याकूब 1:17 दर्शाता है, संपूर्ण सत्य परमेश्वर का सत्य

है। और यह बात तब भी लागू होती है जब अविश्वासी सत्य की खोज करते हैं। अय्यूब का बुद्धिमान मित्र एलीहू अय्यूब 32:8 में इसे इस प्रकार कहता है :

> परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही, सर्वशक्तिमान की दी हुई साँस, जो उन्हें समझने की शक्ति देता है (अय्यूब 32:8)।

यहाँ एलीहू ने दर्शाया कि संपूर्ण सच्चा ज्ञान और समझ परमेश्वर की ओर से आता है। और हमारी आत्माओं और परमेश्वर की साँस के साथ ज्ञान को जोड़ना दर्शाता है कि पवित्र आत्मा त्रिएकता का वह व्यक्तित्व है जो इस ज्ञान को प्रदान करता है।

यही नहीं, पवित्र आत्मा विधानीय रूप में संसार को इस रीति से संचालित करता है कि भला व्यवहार अच्छे परिणामों को उत्पन्न करे। यह नीतिवचन जैसे बाइबल-आधारित बुद्धि साहित्य का मूलभूत तर्क है। और यह सब मानवीय समाजों पर लागू होता है। उदाहरण के लिए, बच्चों को अनुशासित करना और सिखाना उन्हें और अधिक सभ्य और जिम्मेदार व्यक्ति बनाता है। दूसरों के साथ दया और निष्पक्षता का व्यवहार उन्हें प्रेरित करता है कि वे भी आपसे वैसा ही व्यवहार करें। नम्र उत्तर क्रोध को हटा देता है, परंतु कड़े शब्द क्रोध को भड़का देते हैं — फिर आप चाहे जो भी हों।

इससे बढ़कर, पवित्र आत्मा कभी-कभी कुकर्मियों को दंड देने और यहाँ तक कि उन्हें मार डालने के द्वारा भलाई को बढ़ाते हैं। हम इस सिद्धांत को भजन 75:5-8; और यशायाह 59:15-21 में देखते हैं। और जैसा कि हम भजन 76:10-12 में पढ़ते हैं :

> निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी, और जो जलजलाहट रह जाए, उसको तू रोकेगा। अपने परमेश्वर यहोवा की मन्नत मानो, और पूरी भी करो; वह जो भय के योग्य है, उसके आस पास के सब उसके लिये भेंट ले आएँ। वह तो प्रधानों का अभिमान मिटा देगा; वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग्य जान पड़ता है (भजन 76:10-12)।

केवल एक उदाहरण के रूप में, याद करें कि निर्गमन 14 में परमेश्वर ने दुष्ट मिस्री सेना को लाल समुद्र में डुबाकर नष्ट कर दिया था। इसने उनके द्वारा इस्राएल के सताव को समाप्त किया, और दूसरे राष्ट्रों को परेशान करने की उनकी योग्यता को भी बहुत अधिक बाधित किया।

पवित्र आत्मा द्वारा संसार को विधानीय रूप से संचालित करना ही वह प्रमुख कारण है कि पाप ने सब मानवीय समुदायों को आत्म-विनाश में नहीं धकेला है। वह अविश्वासियों को पूर्ण रूप से बुरा बनने से रोकता है, और उनके द्वारा किए जानेवाले विनाश को सीमित करता है। यही नहीं, यह उसका सकारात्मक प्रभाव ही है जो खरे प्रशासनों, मित्रतापूर्ण संबंधों, और स्नेहपूर्ण परिवारों की रचना करता है। और ये उसके बौद्धिक वरदान ही हैं जो हमें मानवीय अध्ययन और उपलब्धि के सब क्षेत्रों में सहायक सत्यों को खोजने की अनुमति देते हैं। सरल शब्दों में कहें तो यह आत्मा की ईश्वरीय भलाई ही है जो संसार में लोगों द्वारा की गई भलाई को उत्पन्न करती है।

अब जबकि हमने एक रूपरेखा प्रदान कर दी है कि कैसे सामान्य अनुग्रह में भलाई को बढ़ाना शामिल होता है, इसलिए आइए हम जीवन को बढ़ाने के आत्मा के कार्य की ओर मुड़ें।

जीवन को बढ़ाना

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले उल्लेख किया है, जब नया नियम नियति विधान में पिता के कार्य के बारे में बात करता है, तो सामान्यतः उसका अर्थ अपने राज्य पर पिता के अधिकार से होता है। परंतु यह पवित्र आत्मा है जो पिता की आज्ञाओं को जाकर पूरा करता है। पवित्र आत्मा द्वारा जीवन को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ -Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

बढ़ाने का एक तरीका संसार की प्राकृतिक क्रियाओं को ऐसे बनाए रखना है कि लोग भोजन और पानी जैसी दैनिक आवश्यकताओं को प्राप्त कर सकें। प्रेरितों के काम 14:15-17 में पौलुस ने परमेश्वर द्वारा सब मनुष्यों की जरूरतों को पूरा करने का उल्लेख किया है, जहाँ उसने लुस्त्रा के अविश्वासियों से यह कहा :

> जीवते परमेश्वर... जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया... वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा (प्रेरितों के काम 14:15-17)।

पवित्र आत्मा मनुष्यों को बच्चे उत्पन्न करने और उनका पालन-पोषण करने की शक्ति देने के द्वारा जीवन को बढ़ाता है। संतान उत्पन्न करने पर उसके अधिकार का उल्लेख उत्पत्ति 20:18, 29:31; व्यवस्थाविवरण 28:11, 30:9; और भजन 113:9 में किया गया है। और उन अनुच्छेदों में भी यह स्पष्ट है जो सिखाते हैं कि बच्चे परमेश्वर की ओर से वरदान हैं, जैसे कि उत्पत्ति 33:5; और यहोशू 24:3, 4। जैसा कि हम भजन 127:3 में पढ़ते हैं :

> देखो, लड़के यहोवा के दिए हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है (भजन 127:3)।

इससे बढ़कर, पवित्र आत्मा सब मनुष्यों के प्रति धीरजवंत, करुणामय और कृपालु है, उनके प्रति भी जो कभी विश्वास में नहीं आते। हम इसे भजन 145:8, 9; यशायाह 26:10; रोमियों 2:4, 5, और अन्य कई स्थानों पर देखते हैं। केवल एक उदाहरण के रूप में, सुनिए लूका 6:35 में यीशु ने क्या कहा :

> अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो, और फिर पाने की आशा न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा, और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है (लूका 6:35)।

यीशु ने सिखाया कि मसीही अपने शत्रुओं से प्रेम करने और उनके प्रति भलाई करने के द्वारा परमेश्वर के समान बन सकते हैं। और यह निर्देश तभी अर्थपूर्ण होता है यदि स्वयं परमेश्वर अपने शत्रुओं के प्रति प्रेमपूर्ण और परोपकारी हो — जो वह है भी।

> परमेश्वर जानता है कि कौन उस पर भरोसा करेगा और उद्धार पाएगा और कौन ऐसा नहीं करेगा। और बाइबल बिलकुल स्पष्ट है कि उसमें सब लोगों के प्रति ऐसा प्रेम है जिसे मैं "सृष्टि-संबंधी" प्रेम कहता हूँ। उदाहरण के लिए, इसी लिए बाइबल कहती है कि परमेश्वर धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है। परमेश्वर केवल विश्वासी किसान के खेत पर ही मेंह नहीं बरसता; वह दोनों के खेतों पर मेंह बरसाता है। और इसलिए क्योंकि परमेश्वर प्रेमी परमेश्वर है और क्योंकि परमेश्वर ने सब लोगों को अपने स्वरूप में बनाया है, इसलिए एक ऐसा भाव है जिसमें उसमें सब लोगों के प्रति सृष्टि-संबंधी परवाह और प्रेम है। अब मेरे विचार में उसमें उन लोगों के प्रति पिता का प्रेम है जिन्हें बाइबल "चुने हुए," अर्थात् छुड़ाए हुए कहती है, वे जो मन फिराव और विश्वास के साथ उसके पास आते हैं। अतः परमेश्वर के पास एक विशेष प्रकार का प्रेम है, परंतु परमेश्वर के पास एक सामान्य प्रकार का प्रेम भी है, और हम इसका प्रमाण सब लोगों के लिए उसकी देखभाल में आत्मा की सेवकाई के द्वारा देखते हैं।
>
> — डॉ. डैनी अकीन

मानवीय समुदाय और संस्कृति में आत्मा द्वारा भलाई की बढ़ोतरी के समान उसके द्वारा जीवन की बढ़ोतरी भी पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए कार्य करती है। यह मनुष्यों को पृथ्वी को वश में करने, इसके प्राणियों पर अधिकार करने, तथा संसार को परमेश्वर के स्वरूपों के साथ भरने के योग्य बनाता है। परंतु जीवन की बढ़ोतरी में आत्मा इतना कृपालु होता है कि वह पापी मनुष्यों को भी ऐसी अच्छी वस्तुएँ प्रदान करता है जो सांस्कृतिक आदेश के लिए आवश्यक नहीं होतीं।

हमारे अध्याय के इस खंड में पहले एक जगह पर हमने प्रेरितों के काम 14 में अविश्वासी लुस्त्रा नगर से कहे पौलुस के शब्दों को उद्धृत किया था जहाँ उसने उनसे कहा था कि परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की और निरंतर इसे भोजन प्रदान किया। परंतु उस अंतिम बात को सुनें जो पौलुस ने प्रेरितों के काम 14:17 में उनसे कही :

> [जीवता परमेश्वर] तुम्हारे मन को... आनन्द से भरता रहा (प्रेरितों के काम 14:17)।

जैसे कि यह अद्भुत प्रतीत होता है, पवित्र आत्मा इतना उपकारी और दयालु है कि वह मनुष्यों को अपने जीवनों में गहरे आनंद का अनुभव प्रदान करता है, उन्हें भी जो उससे घृणा करते हैं।

सामान्य अनुग्रह की पवित्र आत्मा की सेवकाई हमारे लिए एक बहुत बड़ा कारण है कि हम उसका आदर और सम्मान करें। यह उनके प्रति कृपा, दया और धैर्य की अभिव्यक्ति है जो इसके योग्य नहीं हैं। यह मानवीय संस्कृति में भलाई और व्यवस्थित क्रम का आधार है। और यह अविश्वासियों के लिए एक अकाट्य कारण है कि वे परमेश्वर का विरोध करना बंद करें, अपने पाप से मन फिराएँ, और मसीह में क्षमा को प्राप्त करें।

उपसंहार

संसार में पवित्र आत्मा के कार्य पर आधारित इस अध्याय में हमने सृष्टि के उसके कार्य को स्पष्ट किया जब ब्रह्मांड की रचना हुई, और प्रकृति तथा मनुष्यजाति के विषय में नियति विधान के उसके कार्य का मोटे तौर पर वर्णन किया। हमने उसका वर्णन करनेवाले कई आदर्शों का सर्वेक्षण करने के द्वारा, और यह दर्शाने के द्वारा उसके प्रकाशन के कार्य पर भी विचार किया है कि आत्मा संपूर्ण प्रकाशन का स्रोत है। और हमने भलाई को बढ़ाने तथा जीवन को बढ़ाने के आधार पर उसके सामान्य अनुग्रह के कार्य को भी दर्शाया है।

संसार में पवित्र आत्मा की उपस्थिति के दूरगामी परिणाम होते हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं, वह सृष्टि के पहले पल से ही अस्तित्व को बनाने, स्थिर रखने और संचालित करने में लगा हुआ है। संपूर्ण जीवन, संपूर्ण इतिहास, संपूर्ण वास्तविकता उसके कार्य पर निर्भर है और उसके कार्य की अभिव्यक्ति है। और यह विश्वासियों के लिए भरोसे और राहत का एक बड़ा स्रोत होना चाहिए। स्वयं परमेश्वर हमारे साथ हर पल उपस्थित रहता है। वह हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है। वह हमें सुरक्षा प्रदान करता है। वह हमसे प्रेम करता है। और वह ऐसे रूपों में सृष्टि के प्रत्येक पहलू को नियंत्रित करता है जो अंततः पृथ्वी पर उसके राज्य की पूर्णता, और हमारे लिए उसकी आशीषों की पूर्णता को लेकर आते हैं।